26-1-1967 ओम शान्ती रात्री क्लास

तुम बच्चों को यह नई नालेज मिलती है। तुम जानते हो सभी भक्त है। ज्ञानवान एक भी नही है। वो सब समझते है ईश्वर सर्वव्यापी है यही ज्ञान है। यह भी ड्रामा में नूंध है किसीको दोष नही दे सकते। जिसको जो आता है वही कह देते। यह ज्ञान है ही तुम ब्राह्मणों के लिये। कल्प पहले वाले ही आवेंगे। समझानें की कोशिश करनी है। बहुत विवाद करते है तो बोलो हम एक को मानते है। वो ही बाप कहते है मुझे याद करो। नही मानते है तो ठीक है जाकर लगो अपने धन्धे में। कोई को दोष नही देते है। बात है बिलकुल नई। चित्रों के लिये कहेंगे यह इनकी कल्पना है। जास्ती वाद विवाद करें बाबा पसन्द नही करते है। बोलो हमारा ज्ञान है सैकेंड का। बीज और झाड़। फिर झाड़ कैसे वृधी को पाते है वो समझना होता है।समझानें लिये यह चित्र बनाये है। सब तो समझानें वाले है भी नही। पतित पावन बाप एक ही है। वो कहते है मुझे याद करो, बस। नां मानें तो छोड़ देना चाहिये। प्रदर्शनी में तो तुम जास्ती टाईम दे भी नही सकते हो। झट बोलो बाप कहते है मुझे याद करो। अल्फ और बे दो अक्षर है। बाप को याद कर वर्सा लेना है। हमारे धर्म के होंगे तो उनको झट जच जावेगा। पहले पहले तो ले जाना चाहिये शिव बाबा के चित्र पर। जास्ती कहे तो बोलो अच्छा टाईम लेकर आना। हल्के-2 बच्चे तो सेकिंड थर्ड क्लास के बच्चे है बाप को मानते है नही वो काम के नही है। अन्त में फैल हो जावेंगे। ऐसे बहुतों को अच्छों-2 को अंहकार आ जाता है। जास्ती महिमा सुनी तो फिर अंहकार आ जाता है फिर किसीकी भी नही सुनेंगे। एक दो की निन्दा करनें लग पड़ते है। कोई भी अवज्ञा होने से अवस्था गिर जाती है। बाप दादा इकठे है नां। थोड़ी भी ग्लानी करते है तो अवस्था गिरेगी जरूर। यह फिर भी रथ है नां। कई बच्चे कहते है यह बाबा बहुत अच्छा है बहुत अच्छी समझ से ज्ञान को समझ रहा है। बाबा कह देते कुछ भी समझा नही है। बाप को जान लें और बाप को नां मिलें यह हो नही सकता। बाबा तो फट से नापास कर देते है। बाबा खुद भी लिखते है जब तुमको निश्चय होगा तब तो तुम खुद ही आकर मिलोगे। अभी पुरूषार्थी हो। निश्चय बहुत बड़ी बात है। कोई 6,8 की पार्टी आती है बाबा समझ जाते है इनमें से कोई ऐक दो को ही निश्चय होगा। तमोप्रधान को सतोप्रधान बनानें वाला एक ही बाप है। बाप समझाते है टूमच डिबेट में मत जाओ।शिव बाबा को ना माने तो छोड़ देना चाहिये। हमारे कुल के जो होंगे उनको टच हो जावेगा। रग(नब्ज)देखनी चाहिये। थोड़ी समझानी देनी चाहिये तुम बहुत बड़े आदमी हो। तुम जो बननें वाले हो उससे भी अभी ऊचें हो। गायन भी तुम ब्राह्मणों का है। त्यौहार भी तुम्हारे लिये है। तुम बड़े आदमी थोड़ा ही बोलते हो। जो यहां के नही होंगे उनकी बुद्धि में बैठे गा ही नही।तुम ड्रामा में बहुत अच्छी सर्विस करनें अर्थ निमित्त बने हुये हो। तुम अ अनेक बच्चे समझसकते हो माया कुमत को बहुत जोर से चमाट मारती है परन्तु पता नही पड़ता है। जैसे चूहा फूक मार काटता है। विघन बहुत डालेगी। बच्चे बाप को ही याद करते रहे तो भी बहुत है। अपना कल्याण कर लेंगे। दूसरों का भी करना है। अच्छा अपना तो कल्याण कर लो। राहू की दसा से वृहस्पत की दसा में ले जाने बाप आये है।सारी दुनिया पर राहू की दसा है उन सबको वृहस्पत की दसा में ले जाना कोई कम बात है क्या। तो श्रीमत पर कितना ध्यान देना चाहिये। भारत ऊच ते ऊच तीर्थ स्थान है। सर्व का सदगती दाता बाप एक है।सब धर्म वालों का सदगती दाता है।वो बाप भारत में आते है। तो बड़े ते बड़ा तीर्थ स्थान हुआ नां। यह कितनी ऊच पढ़ाई है।गीता पाठशाला कहते है। वो पाठशाला थोड़ी है।वास्तव में है एक गीता बाकी भागवत में तो स्थूल चरित्र लिखे हुये है। इस तन रूपी डब्बी में कितना अच्छा हीरा बैठा हुआ है।कहते है नां शी नां खटे,शी जो बेठन खटे।वो ही शाल 50 रूपये। वो ही शाल 5,4 कागज में लपेट कर अच्छी शोभा वान बना कर देंगे तो 100 में भी ले लेंगे।तो यह बेठन हुआ नां। यह कितना स्पष्ट है। कहते है मै इन द्वारा खेल करता हूं। हम दोनों इकठे करते है।हम वो नही मानेंगे कहते है हमारी तो सदा जीत है। कब-2 खाने पर बैठता हूँ समझता हूँ बाबा अपने रथ को खिला रहे है। क्या अपने रथ की परवरिश नही करेंगे। यह भी युक्तियां है बाबा को याद करने की। ओमशान्तीगुडनाईट